महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश –२७३१६५
Mahayogi Gorakhnath Krishi Vigyan Kendra
Peppeganj, Gorakhpur- 273165 (UP)

Dr. Vivek Pratap Singh
Subject Matter Specialist- Animal Science

पशुओ में सर्रा रोग

- गाय और भैस में होने वाला प्रोटोजोआ जनित एक महत्वपूर्ण रोग है।
- यह रोग काटने वाले मक्खियों द्वारा संचरित होता है।
- गाय और भैस भी घोड़े व ऊट के लिए इस रोग के कोश मेजबान है।
- संक्रमित पशु के रक्त, कभी–कभी मांस व दूध इस रोग के स्रोत होते है।
- रक्त अल्पता की वजह से उत्पादन में अत्यधिक कमी आती है। तनावग्रस्त पशु में इस रोंग की संभावना अधिक होती है।

काटने वाली मक्खिया जो सर्रा को संचरित करती हैं

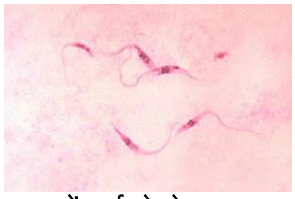

रक्त में सर्रा के रोगाणु

लक्षण

कमजोर व रक्त अल्प पशु

- प्रगतिशील रक्त अल्पता, भर में कमी और कमजोरी
- गर्भपात, बाझपन और भैस में समयपूर्व कमजोर बच्चे का जन्म
- गाय को उच्च मृत्यु दर वाली दीर्घकालिक बीमारी हो सकती है जो 2 साल तक चल सकती है।
- दो सप्ताह से दो माह में मृत्यु हो सकती है।
- शरीर के निचले हिस्सों में शोफी सूजन (पैर, ब्रिस्केट एवं उदर) देखा जा सकता है।
- लसिका ग्रंथियों में भी सूजन हो सकता है।
- स्नायुविक लक्षण जैसे सर लटकाना, चकरी, अंधापन, अति उत्तेजना, हाथ–पैर मरना भी देखा जाता है ।

रोकथाम

- नियमित रूप से गोबर व मूत्र का सही जगह पर निपटारा करें।
- पर्याप्त हवा और सूर्य का प्रकाश शेड में उपलब्ध होना चाहिए।
- शेड और आस पास के क्षेत्रो में कीटनाशक का प्रयोग पशु चिकित्सक के सलाह के अनुसार किया जा सकता है
- गोबर–मूत्र के किसी भी जामव से बचना चाहिए।
- शाम के समय गौशाला में नीम की पत्तियों को जलाकर धुआं करने से मक्खियों के उपद्रव से बचने में सहायता मिलती है।
- मक्खियों को भगाने वाले पदार्थ की सही मात्राध्सांद्रता में उपयोग करें।
- काटने वाली मक्खियों को दूर भागने के लिए प्राकृतिक मक्खी निरोधक जैसे नीम के तेल इत्यादि का नियमित इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे रासायनिक जैसा बुरा प्रभाव पशु में नहीं होता और मक्खी प्रतिरोधक क्षमता विकसित होने का भी खतरा नहीं होता।
- हमेशा दवा बालों की विपरीत दिशा में लगनी चाहिए। दवा पुरे शरीर खासकर निचे के हिस्सों व पैरों पर लगाएं।

उपचार

- लक्षणों को देखकर पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
- तुरंत उपचार से पशु को ठीक किया जा सकता है।

Mobile : 07651922058, 09415745095
e-mail: vpslpm@gmail.com vpsbhu@rediffmail.com